सम्मेलन के मुख्य आकर्षण / केन्द्र बिन्दु

- बीज वक्तव्य
- आमन्त्रित वक्तव्य
- आलेख/शोधपत्र वाचन
- पैनल चर्चा
- सर्वश्रेष्ठ आलेख पुरस्कार (प्रथम व द्वितीय)
- सांस्कृतिक कार्यक्रम
- आलेख प्रकाशन (सम्पादित पुस्तक में)

सारांश भेजने हेतु

सारांश भेजने के इच्छुक विद्यार्थी, शोधार्थी, प्राध्यापक, एवं अन्य विद्वतजन सुझाए गए उपविषयों पर या मुख्य विषय से संबंधित किसी अन्य विषय पर अपना स्वरचित व मौलिक सारांश (200–250 शब्दों में), कृपया इस मेल पर प्रेषित करें –**gjmirs2024@gmail.com**. सारांश केवल हिन्दी या अंग्रेजी में ही भेजें।

कृपया सारांश में अपना नाम, पद, संस्था का नाम और फोन नं व ईमेल अवश्य अंकित करें।

समयावधि

सारांश भेजने की अंतिम तिथि : 10 अगस्त, 2024
अग्रिम पंजीकरण की अंतिम तिथि : 12 अगस्त, 2024

नोट:

1. केवल स्वीकृत सारांश पर आधारित शोधपत्र/आलेख के प्रस्तुतिकरण की अनुमति होगी, जिसकी सूचना संबधित को सारांश भेजने के तीन दिन के भीतर दे दी जाएगी।
2. सम्मेलन में ऑनलाईन शोधपत्र/आलेख प्रस्तुति का विकल्प भी होगा।
3. चयनित आलेख/शोध–पत्र संपादित पुस्तक में प्रकाशित किये जायेंगे।
4. गुरु जम्भेश्वर जी से सम्बन्धित साहित्य प्राप्त करने के लिए गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान, जीजेयू, हिसार, या सम्मेलन संयोजक या आयोजन सचिव से सम्पर्क करें।

पंजीकरण

सभी प्रतिभागियों से अनुरोध है कि वे अन्तिम तिथि से पहले अपना पंजीकरण शुल्क और आवासीय शुल्क (यदि आवश्यक हो तो) UPI/Online Bank Transfer के माध्यम से निर्धारित बैंक खाते में जमा करें, और फिर दिए गए गूगल फॉर्म पर स्वयं को पंजीकृत अवश्य करें। कृपया भुगतान का स्क्रीन शॉट / ई–स्लिप गूगल फॉर्म पर अपलोड करें। पंजीकरण के लिए **गूगल फॉर्म लिंक** https://forms.gle/EtubrjnrNDv74hro9 या **QR कोड** का उपयोग करें।

पंजीकरण शुल्क

क्रमांक	वर्ग (कैटेगरी)	पंजीकरण शुल्क (अग्रिम)	पंजीकरण शुल्क (तत्काल)	आवासीय शुल्क (पंजीकरण शुल्क के अतिरिक्त)
1.	शोधार्थी एवं विद्यार्थी	₹ 1000	₹ 1500	₹ 1000 प्रतिदिन (On sharing basis)
2.	प्राध्यापक एवं प्रतिनिधि	₹ 1500	₹ 2000	
3.	विदेशी प्रतिनिधि	US $100	US $150	US $ 50 प्रतिदिन

बैंक विवरण

Bank Name	Account Holder	Account No.	IFSC
Punjab National Bank	**Organizing Secretary**	**4674000100044231**	**PUNB0467400**

सम्मेलन स्थल

चौ. रणबीर सिंह सभागार
गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार

सम्मेलन संरक्षक

प्रो. नरसी राम बिश्नोई
कुलपति
गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार

सम्मेलन संयोजक

प्रो. किशनाराम बिश्नोई
विभागाध्यक्ष
गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान

सम्मेलन निदेशक

प्रो. नरेन्द्र कुमार बिश्नोई
अधिष्ठाता
गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान

आयोजन सचिव

डॉ. जयदेव बिश्नोई
सहायक प्रोफेसर, अंग्रेजी और विदेशी भाषा विभाग

सलाहकार समिति

प्रो. योगेश सिंह, कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
प्रो. टंकेश्वर कुमार, कुलपति, हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेन्द्रगढ़
प्रो. हरमोहिन्द्र सिंह बेदी, कुलाधिपति, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला
प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री, उपाध्यक्ष, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला
प्रो. मुरली मनोहर पाठक, कुलपति, श्री लालबहादुर राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
प्रो. दिनेश चन्द्र शास्त्री, कुलपति, संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उतराखण्ड
श्री गजेन्द्र चौहान, कुलपति, दादा लखमीचंद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ परफॉर्मिंग एण्ड विजूयल आर्ट्स, रोहतक, हरियाणा
श्री एस.ए.आर.पी.वी. चतुर्वेदी स्वामी, श्री रामानुजा मिशन ट्रस्ट, चेन्नई
प्रो. सुषमा यादव, प्रतिकुलपति, हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेन्द्रगढ़
प्रो. अक्षय कुमार, अंग्रेजी एवं सांस्कृतिक अध्ययन विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
प्रो. कृष्ण कुमार कौशिक, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली
प्रो. मोहन, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
प्रो. पुष्पिता अवस्थी, निदेशक, हिन्दी यूनीवर्स फांउडेशन, नीदरलैंड
प्रो. गलीना साकोलोवा, सोफिया विश्वविद्यालय, सोफिया, बुल्गारिया
प्रो. देवेन्द्र कुमार सिंह गौतम, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

आयोजन समिति

प्रो. विनोद कुमार छौक्कर, कुलसचिव
प्रो. संदीप सिंह राणा, तकनीकी सलाहकार कुलपति
प्रो. देवेन्द्र कुमार, अधिष्ठाता, अकादमिक मामले
प्रो. मनोज दयाल, अधिष्ठाता, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान
प्रो. आशा गुप्ता, अधिष्ठाता, पर्यावरण और जीव विज्ञान
प्रो. वंदना पूनिया, अधिष्ठाता, शिक्षा
प्रो. संजीव कुमार, अधिष्ठाता, कॉलेज
प्रो. विनोद कुमार बिश्नोई, निदेशक, हरियाणा बिजनेस स्कूल
प्रो. सुनीता रानी, निदेशक, मदन मोहन मालवीय शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र
प्रो. अनिल कुमार, अध्यक्ष, जैव प्रौद्योगिकी विभाग
प्रो. धर्मेन्द्र कुमार, अध्यक्ष, ए.आई और डाटा विज्ञान विभाग
प्रो. राकेश कुमार बहमनी, अध्यक्ष, अंग्रेजी और विदेशी भाषा विभाग
डॉ. विनोद कुमार, पुस्तकालयाध्यक्ष

सम्पर्क सूत्र

सम्मेलन कार्यालय : 01662–263159 | E-mail : gjmirs2024@gmail.com

पंजीकरण सम्बन्धी
डॉ. जयदेव बिश्नोई: + 91 9417488391
डॉ. गीतू धवन: + 91 9215537097
डॉ. पुष्पा बिश्नोई + 91 7015958317
कोमल: + 91 7988944142

आवास और परिवहन सम्बन्धी
प्रो. राकेश कुमार बहमनी: + 91 9896271775

अतिरिक्त जानकारी हेतु
प्रो. किशनाराम बिश्नोई
+ 91 9416422416
डॉ. जयदेव बिश्नोई
+ 91 9417488391

कृपया सम्मलेन से संबंधित सभी अपडेट के लिए सम्मेलन की वेबवाइट देखें।

सम्मेलन वेबसाइट : https://www.gjust.ac.in/conference/gjmirs2024

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन

गुरु जम्भेश्वर जी के नैतिक, आध्यात्मिक एवं पर्यावरणीय चिंतन की वर्तमान युग में प्रासंगिकता

22–23 अगस्त, 2024

आयोजक

गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान
गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,
हिसार–125001, हरियाणा (भारत)

NAAC A+ ग्रेड मान्यता प्राप्त हरियाणा राज्य सरकार का विश्वविद्यालय

https://www.gjust.ac.in/conference/gjmirs2024

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के विषय में

भारत में नैतिक और आध्यात्मिक चिंतन की परंपरा सहस्राब्दियों से चली आ रही है, जो यहाँ के सांस्कृतिक, दार्शनिक और धार्मिक ताने-बाने में गहराई से समाई हुई है। वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन मध्यकाल के आद्यप्रणेता श्री गुरु जम्भेश्वर जी (सन् 1451-1536) के नैतिक, आध्यात्मिक और पर्यावरणीय चिंतन की व्याख्या करने और आधुनिक संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता को समझने के लिए किया जा रहा है। वर्तमान राजस्थान के नागौर जिले के पीपासर गाँव में सन् 1451 (विक्रम संवत् 1508) में अवतरित गुरु जम्भेश्वर जी, जिन्हें गुरु जाम्भोजी के नाम से भी जाना जाता है, एक महान् विभूति थे, जिन्होंने मानव को आध्यात्मिक एवं नैतिक दृष्टि से ऊँचा उठाने का सहज और व्यावहारिक मार्ग बताया। लोक कल्याण के इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु गुरु जी ने सन् 1485 में बिश्नोई धर्म की स्थापना की और 29 धर्म-नियमों की आचार संहिता स्थापित की। गुरु जी ने अपनी वाणी व उपदेश जो जम्भवाणी या सबदवाणी के रूप में प्रचलित है, में एक तरफ मनुष्य के सदाचरण को अत्यधिक महत्व दिया और उसे चित्तशुद्धि के लिए अनिवार्य माना तो दूसरी ओर मुक्ति प्राप्त करना मानव जीवन का सर्वोच्च और अंतिम ध्येय माना है। गुरु जम्भेश्वर जी के चिंतन का एक केंद्र प्रकृति के साथ सद्भाव में रहने का सिद्धांत भी है। सभी जीवन रूपों की पवित्रता को पहचानकर, गुरु जी मनुष्य को ब्रह्मांड के साथ गहरा आध्यात्मिक संबंध विकसित करने के लिए प्रेरित करते हैं। निःसन्देह गुरु जम्भेश्वर जी के उपदेश और शिक्षाएं आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण और आवश्यक हैं जितनी मध्यकाल में थी। आज जब संसार में वैयक्तिक, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंसा, वैमनस्य, शोषण, आतंकवाद, पर्यावरण प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी ज्वलंत समस्याएं बढ़ती जा रही हैं तो गुरु जम्भेश्वर जी द्वारा बताए गए आत्मत्याग, शील-संतोष, ईमानदारी, अहिंसा, सत्य, प्रेम, जीव-दया और पर्यावरण संरक्षण आदि सिद्धांतों व उपदेशों का विशेष महत्व है। इस सम्मेलन का मुख्य लक्ष्य गुरु जम्भेश्वर जी के नैतिक, आध्यात्मिक और पर्यावरणीय दर्शन के विभिन्न आयामों को जानने और उनकी सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक उपादेयता पर गहराई से मनन करने के लिए दुनिया भर से विद्वानों, शोधकर्ताओं, विद्यार्थियों, प्राध्यापकों व अन्य चिंतकों को एक साथ एक मंच पर लाना है। सम्मेलन की सफलता हेतु विद्वतगण के सक्रिय योगदान की अपेक्षा है।

सम्मेलन के उद्देश्य

- गुरु जम्भेश्वर जी द्वारा प्रतिपादित नैतिक, आध्यात्मिक और दार्शनिक सिद्धांतों की व्याख्या करना और इनकी समसामयिक संदर्भों में प्रयोज्यता पर विमर्श करना।
- वैश्विक स्तर पर समकालीन पर्यावरणीय चुनौतियों को संबोधित करने के लिए गुरु जम्भेश्वर जी के सिद्धांतों के महत्व की खोज करना।
- विभिन्न सांस्कृतिक और धार्मिक पृष्ठभूमियों से आग्रहित विद्वानों, खोजकर्ताओं, और गुरु जम्भेश्वर जी की शिक्षाओं में रुचि रखने वाले चिंतकों के बीच विचार-विमर्श को बढ़ावा देना और गुरु जी की विरासत का सम्मान करना।
- विद्वानों को गुरु जम्भेश्वर जी के नैतिक, आध्यात्मिक और पर्यावरणीय दृष्टिकोण के विभिन्न बिंदुओं पर शोध-पत्र प्रस्तुत करने के लिए एक मंच प्रदान करना।
- समाज और पर्यावरण की उन्नति के लिए सामाजिक नीतियों, शैक्षिक पाठ्यक्रमों और दैनिक जीवन में गुरु जम्भेश्वर जी के सिद्धांतों को शामिल करने के लिए व्यक्तियों और संगठनों को प्रेरित करना।

गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान के विषय में

गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान की स्थापना 1995 में गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के साथ ही हुई। संस्थान का उद्देश्य एवं लक्ष्य जम्भवाणी एवं जाम्भाणी साहित्य के साथ विभिन्न धर्मों एवं दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन एवं अनुसंधान करना है जिसमें प्रमुख रूप से सनातन, हिन्दू, बौद्ध, जैन, सिक्ख व ईसाई धर्म एवं संत साहित्य प्रमुख हैं। इसके साथ ही भारतीय दार्शनिक मतों का अध्ययन एवं अनुसंधान करना तथा भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं इतिहास पर शोध कार्य करना भी संस्थान का प्रमुख लक्ष्य है। संस्थान द्वारा विश्व के सभी धर्मों का पर्यावरण की दृष्टि से अध्ययन किया जा रहा है। इसके साथ-साथ संस्थान तुलनात्मक धर्म-दर्शन एवं जाम्भाणी साहित्य पर पीएच.डी. डिग्री प्रदान करता है।

गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के बारे में

गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय दिल्ली-रोहतक राष्ट्रीय राजमार्ग 9 पर दिल्ली से 167 किलोमीटर और चण्डीगढ़ से लगभग 231 किलोमीटर की दूरी पर हिसार में स्थित, एक राज्य विश्वविद्यालय है जिसकी स्थापना 20 अक्टूबर 1995 को हरियाणा राज्य के विधानमंडल के एक अधिनियम द्वारा उच्च शिक्षा के उभरते क्षेत्रों में अध्ययन और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए की गई थी। 15वीं शताब्दी की महान् विभूति एवं पर्यावरणविद् गुरु जम्भेश्वर जी महाराज के नाम पर स्थापित यह विश्वविद्यालय प्रौद्योगिकी, फार्मेसी, पर्यावरण विज्ञान, गैर-पारम्परिक ऊर्जा स्त्रोत, जनसंचार, इंजीनियरिंग, प्रबन्धन, मानविकी और समाज विज्ञान और धार्मिक अध्ययन आदि क्षेत्रों में शिक्षा एवं शोध प्रदान कर रहा है। लगभग 372 एकड़ के विशाल क्षेत्र में फैला हुआ यह विश्वविद्यालय NAAC से A+ ग्रेड मान्यता प्राप्त है। विश्वविद्यालय को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित टाइम्स हायर एजुकेशन वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2024 में 1201-1500 बैंड में स्थान मिला है। इसके इलावा विश्वविद्यालय ने प्रसिद्ध टाइम्स हायर एजुकेशन यंग यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2024 में भारत में 41वें स्थान पर जगह हासिल की है। इस प्रतिष्ठित रैंकिंग में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने वाला यह हरियाणा का एकमात्र विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय ने NIRF-2023 में फार्मेसी श्रेणी में 49वीं रैंक, प्रबंधन श्रेणी में 100वीं रैंक, विश्वविद्यालय श्रेणी में 101-150 रैंक बैंड और समग्र श्रेणी में 151-200 रैंक बैंड हासिल किया है। विश्वविद्यालय को 'यूआई ग्रीन मैट्रिक वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग' में 2023 में दुनिया में 409वीं और भारत में 16वीं 'वर्ल्ड मोस्ट सस्टेनेबल यूनिवर्सिटी' के रूप में चुना गया है। यही नहीं शराब और मादक द्रव्यों के सेवन की रोकथाम के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए विश्वविद्यालय को राज्य स्तर पर प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। विश्वविद्यालय का वर्तमान एच-इंडेक्स 122 है, जो हरियाणा राज्य के किसी भी विश्वविद्यालय का उच्चतम एच-इंडेक्स है। शिक्षकों और शोधकर्ताओं द्वारा प्रतिष्ठित समीक्षा पत्रिकाओं में कुल 4304 शोध पत्र प्रकाशित किए गए हैं, जो 91000 से अधिक उद्धरणों के साथ स्कोपस में सूचीबद्ध हैं। विश्वविद्यालय का औसत पेपर उद्धरण 21.16 है जो इस क्षेत्र में सबसे अधिक है। वर्तमान में विश्वविद्यालय 28 शिक्षण विभागों के साथ कैम्पस, ओडीएल एवं ऑनलाइन इत्यादि माध्यमों से 150 से अधिक यूजी, पीजी एवं पीएचडी कार्यक्रम प्रदान कर रहा है।

उपविषय

गुरु जम्भेश्वर जी के नैतिक चिंतन की आधुनिक युग में प्रासंगिकता

- गुरु जम्भेश्वर जी की वाणी में नैतिकता, मानव मूल्य एवं व्यक्तित्व विकास
- जम्भवाणी के नैतिक मूल्य और युवा जीवन
- जम्भवाणी के नैतिक मूल्य और नारी सशक्तिकरण
- जम्भवाणी के संदेश और आधुनिक सामाजिक जीवन व्यवस्था
- जम्भवाणी में लोकमंगल और समाज सुधार की अवधारणा
- गुरु जम्भेश्वर जी के नैतिक चिंतन का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन

गुरु जम्भेश्वर जी का आध्यात्मिक एवं दार्शनिक चिंतन

- गुरु जम्भेश्वर जी की वाणी में आत्मा, ब्रह्म व जीव-जगत के सिद्धांत
- गुरु जम्भेश्वर जी की वाणी में ज्ञान, भक्ति और कर्म का समन्वय
- जम्भवाणी में भौतिकता और अध्यात्म का समन्वय
- गुरु जम्भेश्वर की वाणी में सर्वधर्म समभाव
- भारतीय संस्कृति में गुरु जम्भेश्वर जी एवं जाम्भाणी संतों का योगदान

गुरु जम्भेश्वर जी का पर्यावरणीय चिंतन

- गुरु जम्भेश्वर जी की वाणी में प्रकृति का स्वरूप
- जम्भवाणी में पर्यावरण संरक्षण की भावना
- जम्भवाणी में सामाजिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण
- जम्भवाणी में सतत् विकास की अवधारणा
- वर्तमान जलवायु परिवर्तन के सन्दर्भ में गुरु जम्भेश्वर जी का पर्यावरणीय दर्शन
- जाम्भाणी संतों की पर्यावरणीय संरचना

भारतीय एवं वैश्विक ज्ञान परम्परा में गुरु जम्भेश्वर जी का स्थान

- भारतीय ज्ञान परम्परा में गुरु जम्भेश्वर जी का योगदान
- वैश्विक ज्ञान-परम्परा में गुरु जम्भेश्वर जी का योगदान
- भारतीय एवं वैश्विक धर्मों और गुरु जम्भेश्वर जी के सिद्धांतों का तुलनात्मक अध्ययन
- भारतीय धर्मों के प्रमुख संस्कार एवं जम्भवाणी के मानव मूल्य
- भारतीय ज्ञान परम्परा में जाम्भाणी संतों का योगदान

जम्भवाणी संदेश और प्रबंधन

- जम्भवाणी संदेश, कार्य व जीवन प्रबंधन
- जम्भवाणी संदेश में कार्यक्षमता व कार्यकुशलता
- जम्भवाणी आदर्श एवं संगठन संस्कृति